Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

विश्व-मंच पर हिंदी: वैश्विक अस्मिता और बाजारवाद के अंतर्द्वंद्व का विवेचन

गोविंद वि जाधव
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय कलबुर्गी

प्रस्तावना

सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक संवाद के इस संधिकाल में, किसी भी भाषा की स्थिति उसके बोलने वालों की संख्या मात्र से निर्धारित नहीं होती, बल्कि इस बात से तय होती है कि वह भाषा विश्व की ज्ञान-व्यवस्था और अर्थव्यवस्था में क्या स्थान रखती है। हिंदी, जो सदियों से भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक धुरी रही है, आज वैश्विक फलक पर एक नए अवतार में उपस्थित है। एक ओर जहाँ इसे विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा होने का गौरव प्राप्त है, वहीं दूसरी ओर यह वैश्विक बाजार की अनिवार्यताओं और अपनी पारंपरिक जड़ों के बीच एक कठिन संघर्ष से गुजर रही है। वैश्वीकरण ने हिंदी के लिए सीमाओं के द्वार तो खोले हैं, लेकिन साथ ही इसके स्वरूप के सामने गंभीर अस्तित्वपरक चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं। यह लेख हिंदी की इसी वैश्विक यात्रा का एक आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द: भूमंडलीकरण, भाषाई साम्राज्यवाद, सॉफ्ट पावर, डिजिटल संक्रमण, सांस्कृतिक औपनिवेशिकवाद, हिंग्लिश, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), प्रवासी भारतीय।

मूल आलेख

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की वर्तमान दशा को समझने के लिए हमें सबसे पहले संख्यात्मक गौरव और गुणात्मक हकीकत के अंतर को समझना होगा। निःसंदेह, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम और गयाना जैसे देशों में हिंदी केवल एक संपर्क भाषा नहीं, बल्कि उन समुदायों की पहचान और संघर्ष का प्रतीक है। आज विश्व के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन इस बात का प्रमाण है कि अकादमिक जगत में इसकी स्वीकार्यता बढ़ी है। परंतु, इस प्रसार के पीछे एक बड़ा कारण भारत का उभरता हुआ विशाल बाजार है। सिलिकॉन वैली की दिग्गज कंपनियाँ जब अपने उत्पादों को हिंदी में उपलब्ध कराती हैं, तो यह हिंदी के प्रति उनके अनुराग का परिणाम नहीं, बल्कि 'मुनाफे की भाषा' का दबाव है। इंटरनेट और डिजिटल क्रांति ने हिंदी को वह मंच दिया जो

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

दशकों की सरकारी फाइलें नहीं दे सकीं। यूनिकोड के आगमन ने हिंदी को टाइपराइटिंग की जटिलताओं से मुक्त कर स्मार्टफोन की उंगलियों तक पहुँचा दिया है, जिससे वैश्विक स्तर पर हिंदी की 'दृश्यता' (Visibility) बढ़ी है।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग ने हिंदी के वैश्विक प्रसार को एक नई दिशा दी है। आज भाषा अनुवादक सॉफ्टवेयर (Language Translators) इतने सटीक हो गए हैं कि भाषा का अवरोध लगभग समाप्त हो रहा है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और ओपनएआई जैसे संस्थान हिंदी के बड़े डेटा सेट पर काम कर रहे हैं। यह तकनीकी हस्तक्षेप हिंदी को एक 'ग्लोबल ईकोसिस्टम' का हिस्सा बना रहा है। हालाँकि, यहाँ एक आलोचनात्मक प्रश्न यह उठता है कि क्या तकनीक के इस दौर में हिंदी केवल एक 'इनपुट भाषा' बनकर रह जाएगी? डेटा की दुनिया में मौलिक विचार आज भी अंग्रेजी में अधिक हैं, और हिंदी अनुवाद के माध्यम से केवल उसका अनुसरण कर रही है। यदि हमें हिंदी को वास्तव में वैश्विक बनाना है, तो तकनीकी नवाचारों और एल्गोरिदम के भीतर हिंदी की मौलिक सोच को समाहित करना होगा, न कि केवल अंग्रेजी के सांचे में हिंदी के शब्दों को फिट करना होगा।

वैश्विक अस्मिता के धरातल पर देखें तो हिंदी आज भारत की सीमाओं को लांघकर संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं की दहलीज तक पहुँच चुकी है। विश्व हिंदी सम्मेलनों के माध्यम से एक 'वैश्विक हिंदी परिवार' की अवधारणा पुष्ट हुई है। फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम और त्रिनिदाद जैसे देशों में हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि उन गिरमिटिया मजदूरों के वंशजों की पहचान और प्रतिरोध की संस्कृति रही है। आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी ने इस अस्मिता को और मजबूती दी है। आज 'यूनिकोड' के माध्यम से हिंदी इंटरनेट की मुख्यधारा का हिस्सा है। डिजिटल दुनिया में हिंदी सामग्री की बढ़ती मांग ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदी भाषी समाज अपनी भाषा में अभिव्यक्ति के लिए आतुर है। यह अस्मिता उस समय और भी प्रखर हो उठती है जब प्रवासी भारतीय अपनी जड़ों की तलाश में हिंदी साहित्य और संगीत का सहारा लेते हैं।

हालाँकि, इस अस्मिता के समानांतर बाजारवाद की एक अत्यंत शक्तिशाली धारा प्रवाहित हो रही है। बाजार के लिए भाषा संवाद का माध्यम कम और 'कमोडिटी' या उत्पाद अधिक है। वैश्वीकरण के शुरुआती दौर में माना गया था कि अंग्रेजी ही एकमात्र वैश्विक भाषा होगी, लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने जल्द ही महसूस किया कि यदि उन्हें भारत के विशाल ग्रामीण और मध्यम वर्गीय बाजार में पैठ बनानी है, तो उन्हें हिंदी का सहारा लेना ही होगा। यहाँ से हिंदी का 'बाजारूकरण' शुरू हुआ। विज्ञापन जगत ने हिंदी को अपनाया तो सही, लेकिन एक विकृत रूप में। "दिल मांगे मोर" या "लाइफ हो तो ऐसी" जैसे नारों ने 'हिंग्लिश' को जन्म दिया। यह बाजारवाद का ही प्रभाव है कि आज शुद्ध हिंदी के स्थान पर एक ऐसी खिचड़ी भाषा को बढ़ावा दिया जा रहा है जो व्याकरणिक रूप से कमजोर है लेकिन उपभोक्ता को आकर्षित करने में सक्षम है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

इस अंतर्द्वंद्व का सबसे रोचक पक्ष मनोरंजन उद्योग, विशेषकर बॉलीवुड और ओटीटी (OTT) प्लेटफॉर्म्स में देखने को मिलता है। हिंदी सिनेमा ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। रूस से लेकर अरब देशों तक हिंदी गानों और संवादों की गूँज है। लेकिन यहाँ भी बाजारवाद हावी है। फिल्मों के शीर्षक से लेकर उनके गीतों तक में भाषाई शुद्धता को किनारे कर दिया गया है। बाजार की मांग है कि भाषा ऐसी हो जो 'ट्रेंड' कर सके। इसी होड़ में हिंदी की वह तत्सम शब्दावली और भाषाई गंभीरता खोती जा रही है जो उसकी अस्मिता का मूल आधार थी। सिनेमाई हिंदी अब केवल बोलचाल की भाषा तक सीमित हो गई है, जिससे उसकी साहित्यिक गहराई का ह्रास हो रहा है।

भाषाई अनुवाद इस पूरे विमर्श में एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है। अनुवाद ने ही हिंदी को वैश्विक ज्ञान-कोश से जोड़ा है, लेकिन बाजार संचालित अनुवाद अक्सर यांत्रिक और प्राणहीन होता जा रहा है। गूगल ट्रांसलेट जैसे उपकरण सूचनाओं का आदान-प्रदान तो सुगम बना रहे हैं, लेकिन वे भाषा की सांस्कृतिक संवेदना को पकड़ने में विफल रहते हैं। जब एक विदेशी ब्रांड अपनी टैगलाइन का हिंदी अनुवाद करता है, तो उसका उद्देश्य केवल संदेश पहुँचाना होता है, न कि हिंदी की भाषाई प्रकृति का सम्मान करना। इसके विपरीत, 'रेत समाधि' (Tomb of Sand) जैसे उपन्यासों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा जाना यह दिखाता है कि जब अनुवाद अस्मिता और संवेदना को केंद्र में रखकर किया जाता है, तो वह भाषा को वैश्विक प्रतिष्ठा दिलाता है।

तकनीकी विकास और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने इस द्वंद्व को और जटिल बना दिया है। आज एल्गोरिदम तय कर रहे हैं कि हिंदी का कौन सा शब्द अधिक खोजा जा रहा है। बाजार की प्राथमिकता 'कीवर्ड्स' (Keywords) पर है, 'भाव' पर नहीं। यदि 'सर्च इंजन' पर अंग्रेजी मिश्रित हिंदी अधिक प्रभावी है, तो लेखक और प्रकाशक भी उसी शैली को अपनाने के लिए मजबूर हैं। यह स्थिति हिंदी की उस मौलिक अस्मिता के लिए खतरा पैदा करती है जो उसे अन्य भाषाओं से विशिष्ट बनाती है। यदि हिंदी केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान की भाषा बनकर रह गई, तो उसका वह सांस्कृतिक पक्ष धूमिल हो जाएगा जो 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को समेटे हुए है।

अंततः, विश्व-मंच पर हिंदी की सार्थकता तभी बनी रहेगी जब वह बाजारवाद के साथ एक संतुलित समझौता करे। बाजार से परहेज करना संभव नहीं है क्योंकि भाषा को जीवित रहने के लिए आर्थिक आधार चाहिए, लेकिन इस प्रक्रिया में अपनी अस्मिता की बलि देना आत्मघाती होगा। हमें एक ऐसी हिंदी की आवश्यकता है जो कंप्यूटर की भाषा भी हो और कविता की भी; जो मॉल में भी बोली जाए और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कूटनीति का माध्यम भी बने। बाजार को हिंदी के अनुकूल बनाना होगा, न कि हिंदी को बाजार के अनुसार पूरी तरह ढल जाना चाहिए। अस्मिता और बाजार के इस संघर्ष में जीत उसी भाषा की होती है जो अपने मूल्यों को बचाए रखते हुए आधुनिकता के साथ कदम मिलाती है। हिंदी में वह सामर्थ्य है, बस आवश्यकता है एक सजग भाषाई नेतृत्व और तकनीकी समावेश की।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

एक और महत्वपूर्ण पहलू प्रवासी भारतीयों (Indian Diaspora) का है। अमेरिका, कनाडा और यूरोप में बसे लाखों भारतीय अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए हिंदी का सहारा ले रहे हैं। बॉलीवुड की फिल्में और संगीत हिंदी के सबसे बड़े 'ब्रांड एंबेसडर' बनकर उभरे हैं, जिन्होंने गैर-हिंदी भाषी देशों में भी इस भाषा के प्रति आकर्षण पैदा किया है। परंतु, एक गहरा संकट 'हिंग्लिश' का बढ़ता प्रभुत्व है। वैश्विक पहचान बनाने की होड़ में हिंदी का जो स्वरूप सामने आ रहा है, उसमें शुद्धता और व्याकरणिक गरिमा का अभाव खटकता है। संचार माध्यमों और सोशल मीडिया पर जिस हिंदी का प्रयोग हो रहा है, वह एक संकर भाषा (Hybrid language) है। यद्यपि भाषा परिवर्तनशील होती है, किंतु यह बदलाव यदि उसकी मौलिक प्रकृति को ही नष्ट करने लगे, तो वह चिंता का विषय है। विदेशों में रहने वाली भारतीय पीढ़ियों के लिए हिंदी अब एक 'हेरिटेज लैंग्वेज' बनकर रह गई है, जिसका उपयोग वे सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक सीमित रखते हैं, जबकि उनके पेशेवर जीवन की भाषा पूरी तरह से अंग्रेजी हो चुकी है।

हिंदी की भविष्य की दिशा इस बात पर निर्भर करेगी कि वह स्वयं को कूटनीति और तकनीकी स्वावलंबन से कैसे जोड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने की दिशा में बढ़ते कदम प्रशंसनीय हैं, लेकिन यह तब तक प्रभावी नहीं होगा जब तक हम स्वदेश में अपनी न्यायपालिका और प्रशासनिक व्यवस्था को पूरी तरह हिंदी-सम्मत नहीं बना लेते। भविष्य की दिशा 'सॉफ्ट पावर' के रूप में हिंदी को स्थापित करने की होनी चाहिए, जहाँ योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन के साथ-साथ हमारी भाषा भी वैश्विक विमर्श का हिस्सा बने। इसके लिए अनिवार्य है कि हम हिंदी को केवल अनुवाद की भाषा न बनाकर 'मौलिक सृजन' की भाषा बनाएँ। यदि हिंदी के माध्यम से रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं और यह विज्ञान एवं तकनीक की आधिकारिक भाषा बनती है, तो इसका वैश्विक भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, वैश्विक परिदृश्य में हिंदी एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संक्रमणकालीन दौर से गुजर रही है। इसकी दशा जहाँ संख्यात्मक और बाजारवादी दृष्टिकोण से सुदृढ़ है, वहीं गुणात्मक और बौद्धिक स्तर पर इसे अभी लंबी यात्रा तय करनी है। हिंदी की दिशा केवल भावनात्मक नारों से नहीं, बल्कि ठोस शोध, तकनीकी एकीकरण और आर्थिक उपयोगिता से तय होगी। हमें यह स्वीकार करना होगा कि वैश्विक होने का अर्थ अपनी जड़ों को काटकर 'हिंग्लिश' हो जाना नहीं है, बल्कि अपनी मौलिकता के साथ आधुनिकता को आत्मसात करना है। यदि हिंदी अपनी सरलता और गहराई के बीच संतुलन बना लेती है, तो वह दिन दूर नहीं जब यह केवल भारत की ही नहीं, बल्कि मानवता के व्यापक सरोकारों की वैश्विक आवाज बनेगी।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:3(5), March 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

संदर्भ ग्रन्थ

1. **डॉ. रामविलास शर्मा** - *भारत की भाषा समस्या* (राजकमल प्रकाशन)।
2. **यूनेस्को रिपोर्ट (2025-26)** - *डिजिटल युग में भाषाओं का भविष्य*।
3. **डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल** - *विश्व हिंदी का वास्तविक परिदृश्य* (सांख्यिकीय विश्लेषण)।
4. **एथ्नोलॉग (Ethnologue)** - *विश्व की जीवित भाषाओं का डेटाबेस*।
5. **विदेश मंत्रालय (भारत सरकार)** - *विश्व हिंदी सम्मेलन (12वां-15वां) के आधिकारिक प्रतिवेदन*।